विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 25 : अंक 52 : नई दिल्ली : 20-26 मार्च 2020

आध्यात्मिक संपोषण-१

अर्हम् १३ मार्च २०२०

वर्तमान में कोरोना वायरस ने कुछ समस्या उत्पन्न कर रखी है। इस स्थिति में चारित्रात्माओं व समणश्रेणी को अभय और समताभाव रखने का प्रयास रखना चाहिए तथा यथौचित्य अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधानी भी रखनी चाहिए।

कई चारित्रात्माएं वर्तमान में विहार (यात्रा) कर रहे हैं अथवा करने की तैयारी में हो सकते हैं। यदि किसी भी चारित्रात्मा को यात्रा में कोई कठिनाई लगे तो वे आचार्यप्रवर के पास अपना निवेदन पहुंचा सकते हैं। प्राप्त निवेदन पर यथासंभव विचार किया जा सकेगा।

वर्तमान समय में सलक्ष्य जप-तप का अनुष्ठान भी किया जा सकता है। रात्रि के बारह बजे से दिन के बारह बजे के बीच

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं।।

श्लोक का कम से कम इक्कीस बार पाठ किया जाए। उसके साथ नवकारसी, पौरुषी, एकासन, आयंबिल, उपवास आदि तपों में से कोई तप भी प्रतिदिन किया जाए। यह अनुष्ठान १४ मार्च २०२० से २६ अप्रेल २०२० तक चारित्रात्माओं, समणश्रेणी सदस्यों व श्रावक-श्राविकाओं द्वारा व्यक्तिगत रूप में अथवा सामूहिक रूप में यथानुकूलता किया जा सकता है। सभी चारित्रात्माएं, समणश्रेणी सदस्य और श्रावक-श्राविकाएं चित्तसमाधि और मनोबल बनाए रखें। मंगलकामना।

नागज, महाराष्ट्र आचार्य महाश्रमण

आध्यात्मिक संपोषण-२

अर्हम् १९ मार्च २०२०

चारित्रात्माओं, समणश्रेणी सदस्यों और श्रावक-श्राविकाओं के लिए--

१. वर्तमान की कोरोना वायरस की स्थिति में हमें अभय और समता भाव रखना चाहिए। प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में सावधानी भी रखनी चाहिए।
२. नए निर्देश तक यथासंभव प्रवचन कार्यक्रम, सम्मेलन, संगोष्ठियां आदि आयोजित न किए जाएं। निर्दिष्ट जप-तप का अनुष्ठान व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप में यथासंभव किया जा सकता है।
३. नए निर्देश तक श्रावक-श्राविकाएं चारित्रात्माओं के चरण-स्पर्श यथासंभव न करें।
४. जो चारित्रात्माएं विहारनिरत हैं, वे अनुकूलता हो तो विहार करें अथवा किसी उपयुक्त क्षेत्र में प्रवास भी कर सकते हैं।

विशेष

तेरापंथी सभाओं के पास हमारा यह संदेश पहुंच जाए तो वे अपने आसपास में विराजित चारित्रात्माओं व समणश्रेणी सदस्यों के पास इसे पहुंचाने का प्रयास कर सकती हैं।

सभी चारित्रात्माओं, समणश्रेणी सदस्यों, संस्था सदस्यों व श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

मचनुर, महाराष्ट्र आचार्य महाश्रमण

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर महाराष्ट्र में

माधवनगर में महातपस्वी महाश्रमण

७ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः सांगली से माधवनगर के लिए प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर करीब सात सौ मीटर की अतिरिक्त दूरी तय करना स्वीकार कर सांगली के तेरापंथ भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान, मिला यह तेरापंथ महान....।' गीत का आंशिक संगान किया। विहार के दौरान कुछ श्रद्धालुओं को अपने घरों आदि के आसपास आचार्यप्रर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आज का विहार कुछ छोटा था, इसलिए आचार्यप्रवर जल्दी माधवनगर में पधार गए।

माधवनगरवासी पूज्यप्रवर के स्वागत में पलक-पावंडे बिछाए खड़े थे। स्थानीय तेरापंथ समाज की प्रसन्नता का कोई पार नहीं था, क्योंकि करीब बावन वर्षों बाद उनके आराध्य उनकी भूमि पर जो पधार रहे थे। स्वागत जुलूस में लोगों की विशाल उपस्थिति और उसके उत्साह को देखकर यह कयास लगाना कठिन था कि यहां मात्र चार तेरापंथी परिवार ही निवासित हैं। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी पूज्यप्रवर के पदार्पण से प्रसन्नता का माहौल था। पूज्यप्रवर मूर्तिपूजक समाज के निवेदन को स्वीकार कर स्थानीय उपाश्रय में पधारे और वहां कुछ समय विराजित हुए। मूर्तिपूजक समाज के लोगों ने अपनी विधि के अनुसार पूज्यप्रवर को वन्दन कर सादर स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन पाथेय प्रदान किया।

उपाश्रय में स्थित मूर्तिपूजक तपागच्छ संप्रदाय की साध्वी संयमिताश्रीजी आदि ठाणा-३ ने पूज्यवर का अभिवादन किया। आचार्यप्रवर का उनसे संक्षिप्त वार्तालाप हुआ। पूज्यप्रवर जैनेतर समाज के लोगों की प्रार्थना को स्वीकार कर राधाकृष्णा गीता मंदिर परिसर में भी पधारे और मंगलपाठ सुनाया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर लगभग ३.६ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर माधवनगर में स्थित श्री बलदेव जाखोटिया मंगल भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

उम्मेद पैलेस व उसके आसपास आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में ईमानदारी को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से माधवनगरवासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। स्थानीय कन्याओं ने गीत को प्रस्तुति दी। तेरापंथ समाज की महिलाओं ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। तेरापंथ समाज के किशोरों व कन्याओं ने परिसंवाद प्रस्तुत किया। श्रद्धालुओं ने संकल्पों का उपहार श्रीचरणों में अर्पित किया। तेरापंथ उपसभा के संयोजक डॉ.विजय संचेती, श्री श्रीकांत संचेती, श्री संयम संचेती, श्री अमित सुराणा और श्री सतीश मालू ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूर्व विधायक श्री शरद पाटिल ने कहा--'परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संदेश के साथ यहां पधारे हैं। आपका संदेश न केवल जैन धर्म के अनुयायियों के लिए, अपितु संपूर्ण भारतवासियों के लिए लाभदायक है। मैं आचार्यश्री द्वारा दिलाए गए संकल्पों का दृढता से पालना करूंगा, यह विश्वास दिलाता हूं।'

कार्यक्रम के दौरान माधवनगर मुस्लिम समाज के कई लोग पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। उनकी ओर से कादरी फारुक मुजावर ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'आज हम स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली समझते हैं कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का मौका मिला। आप बहुत अहम काम लेकर अहिंसा यात्रा पर निकले हुए हैं। इस यात्रा की हिन्दुस्तान को बहुत जरूरत है। आपका यह कार्य हमें हमेशा याद रहेगा। तमाम मुस्लिम जमात की ओर से मैं आपको शुभकामनाएं अर्पित

करता हूं। हम तमाम मुस्लिम लोग आपके साथ हैं। मैं यही दुआ करता हूं कि आपकी उम्र बढ जाए और आप हमेशा इन्सानियत के लिए कार्य करते रहें।'

महासभा के प्रधान न्यासी श्री भंवरलाल बैद और श्री राजेन्द्र घोड़ावत ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

जीवन का आभूषण है तपस्या

८ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः माधवनगर से कवठेएकन्द की ओर प्रस्थान किया। सांगली, तासगांव के आसपास अंगूर की खेती प्रचुर मात्रा में होती है। मार्ग में लताओं पर लटके हुए हरे अंगूरों के गुच्छे राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। इसके साथ यत्र-तत्र गन्ना, ज्वार और मकई की फसल भी दृष्टि गोचर हो रही थी। पूज्यप्रवर करीब १३.८ कि.मी. का विहार कर कवठेएकन्द में स्थित न्यू इंग्लिश स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'तप साधना का एक अंग है। उसके अनशन, ऊनोदरी आदि बारह प्रकार बताए गए हैं। तपस्या पूर्वार्जित कर्मों को काटने का उपाय है। तप कारण है और निर्जरा कार्य है। तप करने से निर्जरा होती है। जिस प्रकार दावानल जंगल को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार तप कर्मों को नष्ट कर देता है। कर्म नष्ट होने से आत्मा का स्वरूप निर्मल बन जाता है। इसलिए आदमी को यथासंभव तप करते रहना चाहिए।

संवर की साधना के साथ तप हो तो वह मानों चारित्र का आभूषण हो जाता है। गृहस्थ चारित्र को पूरी तरह स्वीकार न भी कर सकें तो वे तपस्या को तो अपने जीवन का आभूषण बना लें।'

न्यू इंग्लिश स्कूल के अध्यापक दिगम्बर जैन समाज के श्री सुधीर शिरोठी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

होली पर श्रद्धा-भक्ति के रंगों से सराबोर बना तासगांव

९ मार्च। फाल्गुन पूर्णिमा। होली का त्यौहार। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः कवठेएकंद से तासगांव की ओर प्रस्थान किया। कवठेएकंद के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित बने। कुछ ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर को साष्टांग वन्दन कर पावन आशीष प्राप्त की। मार्ग के परिपार्श्व में यत्र-तत्र सौंफ और केले की खेती दृष्टिगोचर हो रही थी। यद्यपि आज का विहार बड़ा नहीं था, किन्तु तासगांव के निवासियों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर की कृपावृष्टि से करीब ढाई किमी की दूरी और बढ गई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तासगांववासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। तासगांव में मात्र चार तेरापंथी परिवार होते हुए भी बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति अन्य जैन समाज के उल्लास को भी दर्शा रही थी। पूज्यप्रवर के पूर्व निर्धारित यात्रा पथ में तासगांव पधारना निर्धारित नहीं था, किन्तु भक्तवत्सल आचार्यप्रवर ने तासगांव के लोगों की पुरजोर प्रार्थना पर कुछ कि.मी. अतिरिक्त चलना स्वीकार कर भी तासगांव में आना निर्धारित किया।

होली पर्व पर बरसने वाला आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह न केवल स्थानीय तेरापंथी समाज को अपितु अन्य जैन समाज को भी श्रद्धाभक्ति के रंग में सराबोर बनाए हुए था। स्थानीय वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के निवेदन को स्वीकार कर आचार्यप्रवर स्थानक में पधारने के लिए आज के निर्धारित प्रवास स्थाल के समीप से आगे पधारे। मार्ग में एक श्रद्धालु परिवार पर अनुग्रह बरसाते हुए आचार्यप्रवर ने कुछ अतिरिक्त दूरी और स्वीकार कर ली तथा उस परिवार के घर में पधारे। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर वह परिवार हर्षविभोर था। मार्ग में अनेक लोगों को अपने-अपने घरों आदि के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और

श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सुअवसर मिला। पूज्यप्रवर स्थानकवासी भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए। संबंधित लोगों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान की। इस स्थानक में एक स्थान पर अंकित है-'आद्यआचार्य परमपूज्य श्रीभिक्षु स्वामी की जय।' इस प्रकार किसी स्थानक में लिखा जाना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। लोगों ने बताया कि यह अंकन किसी तेरापंथी महिला, जिसका विवाह स्थानकवासी परिवार में हुआ है, के आग्रह भरे अनुरोध पर किया गया है। स्थानक के समीप लाइफ केयर मल्टी स्पेशिलिटि हॉस्पिटल से संबंधित लोगों के निवेदन को स्वीकार कर पूज्यप्रवर उस हॉस्पिटल में पधारे और मंगलपाठ उच्चरित किया। प्रवास स्थल की ओर लौटने के मार्ग में भी कुछ लोगों को अपने-अपने घरों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष प्राप्त करने का सुअवसर मिला। पूज्यप्रवर कुल करीब ७ कि.मी. का विहार कर तासगांव के श्री पद्मावती मंगल कार्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। दुनिया में जितने जीव हैं, परमाणु हैं, उतने ही रहेंगे, न कम होंगे न ज्यादा। जीवों और परमाणुओं का पर्याय परिवर्तन होता रहता है। आत्मा नित्य है और शरीर अनित्य है। यह जीवन अनित्य है। जो दुनिया में आता है, उसे जाना ही होता है।

आदमी को चाहिए कि वह धर्म के कार्य में आलस्य न करे। किसी कार्य को कल करूंगा, यह कहने का अधिकार तीन व्यक्तियों को हो सकता है--१. जिसकी मौत के साथ दोस्ती हो और उसके कहने से मौत उसे छोड़ दे। २. जो दौड़ने में इतना तेज हो कि मौत के हाथ ही न आए। ३. जो कभी न मरने वाला हो। किन्तु दुनिया में तीनों ही प्रकार के व्यक्ति नहीं मिलते। इसलिए आदमी पापकर्म से यथासंभव बचने और धर्माराधना करने का प्रयत्न करे।

पूज्यप्रवर ने होली के संदर्भ में प्रसंगवश कहा--'आज होली का त्यौहार है। इस त्यौहार के साथ रंग जुड़े हुए हैं। हमारे में साधना का रंग रहे, आराध्य, पूजनीय साधुओं के प्रति भक्ति का रंग रहे, आध्यात्मिक सेवा भावना का रंग रहे। होली के अवसर पर भीतरी रंगों के संग रहने की प्रेरणा प्राप्त करें। आज चातुर्मासिक पक्खी है। गत चार माह में कोई भूल हो गई हो तो उसकी विशुद्धि भी आज करणीय होती है।' पूज्यप्रवर ने समुपस्थित जनमेदिनी को होली के संदर्भ में नमस्कार महामंत्र के जप के साथ रंगों का ध्यान कराया।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य लोगों सहित तासगांववासियों ने आचार्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। श्री अजय गटागट, श्रीमती प्रवीणा दूगड़, श्रीमती रूपाली बाफणा, श्री उम्मेदमल बोथरा, श्री सचिन बोथरा, श्री प्रदीप बोथरा और श्री विनोद घोड़ावत ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। स्थानीय जैन समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। जैन समाज के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। छतीसगढ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गौतमचंद चोरड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बालिका माही दूगड़ और सुश्री सृष्टि बोथरा ने अपने बालसुलभ भावों को प्रस्तुति दी।

सांसद श्री संजय पाटिल ने कहा--'परम पूजनीय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने यहां पधारकर हम सभी लोगों पर कृपा बरसाई है। आप सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति-इस त्रिआयामी उद्देश्य के साथ देश-विदेश में अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। मैं अपने क्षेत्र में आपका दिल से स्वागत करता हूं। मैं आपसे यहीं प्रार्थना करता हूं कि आपकी कृपा एवं आशीर्वाद हम सब पर हमेशा बनी रहे और हम सत्कर्म में लीन रहें।'

विधायक श्रीमती सुमन पाटिल, नगरपालिका अध्यक्ष डॉ. विजय सांवत, पूर्व अध्यक्ष श्री सुबासाहब पाटिल आदि कार्यक्रम में उपस्थित थे। उन्होंने पूज्यप्रवर को वन्दन कर मंगल आशीष प्राप्त की।

पक्खी की पाठशाला

आज चातुर्मासिक पक्खी थी। चातुमार्सिक पाक्षिक प्रतिक्रमण के पश्चात् आचार्यप्रवर ने हर पक्खी की

भांति मुनिवृंद को एक श्लोक सिखाया--

अणथोवं वणथोवं अग्गीथोवं कसायथोवं च।
न हु भे वीससियव्वं थोवं पि हु तं बहु होइ।।

पूज्यप्रवर ने इस श्लोक की विभिन्न प्रसंगों आदि के माध्यम से सोदाहरण व्याख्या करते हुए फरमाया--'जिस प्रकार ऋण, व्रण और अग्नि थोड़े भी कभी बहुत नुकसानदेह हो सकते हैं, उसी प्रकार थोड़ा कषाय भी कभी बहुत हानिकारक हो सकता है। इसलिए क्रोध, अहंकार, माया और लोभ से बचने का प्रयास करना चाहिए।' आगामी दिन विहार की सम्पन्नता के पश्चात् साध्वीवृंद ने पूज्यप्रवर से पक्खी संबंधी खमतखामणा किए। तदुपरांत साधु-साध्वियों में पारस्परिक खमतखमणा का क्रम रहा। आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों को 'अणथोवं वणथोवं' श्लोक के आधार पर पावन संबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर द्वारा हर पक्खी के अवसर पर मिलने वाला यह प्रेरक और रोचक संबोध साधु-साध्वियों के लिए ज्ञानवर्धक होने के साथ पोषक भी सिद्ध हो रहा है। यह अनायोजित आनन्दप्रद कक्षा चारित्रात्माओं के लिए 'पक्खी की पाठशाला' के रूप में स्थापित हो रही है।

अंगूर के बागानों के बीच गणमाली का शुभागमन

१० मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः तासगांव से मणेराजुरी की ओर प्रस्थान किया। स्थानीय सांसद श्री संजय पाटिल विहार के प्रारंभ में ही पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए। वे एक कि.मी. से भी ज्यादा पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चले। वे काफी दूर तक जैन ध्वज लेकर भी चले।

मार्ग के आसपास अंगूर के बागान ही बागान दिखाई दे रहे थे। कई बागानों में लताओं पर काले और हरे अंगूरों के गुच्छे लटके हुए थे। अंगूरों का आकार कुछ विशालता लिए हुए था। तासगांव और उसका परिपार्श्ववर्ती क्षेत्र अंगूर की प्रचुर पैदावार और अंगूरों को किसमिस का रूप देने के लिए प्रसिद्ध है। प्राप्त जानकारी के अनुसार यहां से प्रतिवर्ष करीब एक लाख अस्सी हजार टन किसमिस निर्यात की जाती है। अंगूर को किसमिस बनाने की प्राकृतिक प्रक्रिया का स्थान आधुनिक युग में रासायनिक प्रक्रिया ने ले लिया है। यद्यपि यह कार्य अब मात्र १२-१३ दिन में ही सम्पन्न हो जाता है, किन्तु स्वास्थ्यात्मक दृष्टि से प्राकृतिक प्रक्रिया संवभतः इससे बेहतर थी। मार्ग के आसपास स्थान-स्थान पर बड़े-बड़े कोल्ड स्टोरेज भी बने हुए थे, अंगूरों को अनुकूल तापमान में संरक्षित किया जाता है। विहार पथ के समीप कुछ खेतों में करेला की खेती दिखाई दे रही थी। उन खेतों में लगे करेलों का आकार कुछ लम्बाई लिए हुए था।

मार्ग में तासगांव की गुरुदेव दादाजी कोंडदेव सैनिकी शाला के विद्यार्थी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर करीब १० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर मणेराजुरी में पधारे। मणेराजुरी के सरंपच श्री सदाशिव कलठोणे, विद्यालय सोसायटी के चेयरमेन श्री सम्पत लडंगे, व्यवस्थापक श्री प्रकाश मैत्रे आदि ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। श्री कलढोणे आदि पूज्यप्रवर के आगे-आगे कुछ दूर जैन ध्वज लेकर भी चले। महावीर पांडुरंग सलुंखे, हाइ स्कूल व ज्युनियर कॉलेज में पूज्यप्रवर का आज सायं तक का प्रवास रहा।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन धर्म में चार शरण सूत्र बताए गए हैं--'अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।'--मैं अर्हतों की शरण स्वीकार करता हूं। मैं सिद्धों की शरण स्वीकार करता हूं। मैं साधुओं की शरण स्वीकार करता हूं और मैं केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण स्वीकार करता हूं। इन चार शरण सूत्रों में प्रमुख सूत्र है--केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि। अर्हतों ने भी मानों धर्म की शरण स्वीकार

की, तब वे अर्हत बने। सिद्ध भी धर्म के द्वारा सिद्ध बने हैं। साधु के जीवन में धर्म होता है। इस प्रकार केवली प्रज्ञप्त धर्म शरणस्थल है।

धर्म के द्वारा संसारसागर को पार किया जा सकता है। शास्त्रकार ने अशरण की बात बताई है कि तुम्हारे मित्र और संबंधीजन तुम्हारे लिए त्राण नहीं है और न ही तुम उन्हें त्राण-शरण दे सकते हो। आदमी को स्वयं के किए कर्म स्वयं को ही भोगने होते हैं। बड़े-बड़े महाराजा, चक्रवर्ती आदि को भी मृत्यु से कोई बचा नहीं सकता। जब शरीर में वेदना होती है, तब संबंधीजन पास मे खड़े होते हुए भी कई बार उस वेदना को दूर नहीं कर पाते। कभी-कभी डॉक्टर के पास भी किसी बिमारी का कोई इलाज नहीं होता। इसी प्रकार बुढापे से बचाना भी सामान्यतया किसी के हाथ की बात नहीं होती। यह अशरणता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को मंगल प्रेरणा प्रदान कर अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार कराई।

तासगांव के सरपंच श्री सदाशिव कलढोणे ने कहा--'आज हमारे गांव में अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश लेकर आए हैं, यह हमारे गांव का भाग्य है। आपकी यह यात्रा सचमुच एक स्तुत्य प्रयास है। परम श्रद्धेय आचार्यश्री भारतीय ऋषि परम्परा को सुशोभित कर रहे हैं। आपके दर्शन कर मैं उल्लसित हूं, अभिभूत हूं। व्यक्ति-व्यक्ति को अध्यात्म से जोड़ने वाली इस यात्रा का मैं दिल से समर्थन करता हूं।'

महावीर पांडुरंग सालुखे हाइ स्कूल के व्यवस्थापक श्री प्रकाश मैत्रे ने कहा--'आज आचार्यश्री के चरण स्पर्श से हमारा विद्यालय पावन हो गया, यह हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं और अभिनन्दन करता हूं। आचार्यश्री की यह यात्रा विश्व की ज्वलंत समस्याओं का समाधान करने वाली है। पूरी दुनिया को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बहुत जरूरत है। आप हजारों किलोमीटर पैदल चलकर इन तीनों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, इसलिए मैं आपके चरणों में प्रणाम करता हूं।'

सायंकाल करीब ५.५० बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर मणेराजुरी से प्रस्थित हुए। अस्ताचल की ओर बढ़ रहा सूर्य प्रायः निस्तेज बना हुआ था। ऐसी स्थिति में हल्की हवा और भी सुहावनी लग रही थी। लगभग ०.७ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर मणेराजुरी में स्थित कन्या विद्यालय में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

बागानों से सूखे मैदानों की यात्रा

११ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः मणेराजुरी से बोरगांव के लिए प्रस्थान किया। विहार पथ का प्रारंभिक भाग संकरा और ऊबड़-खाबड़ था। टूटी हुई सड़क पर खड्डे भी बहुत थे, लेकिन यह विषम पथ भी दोनों ओर प्रचुर मात्रा में दिखाई दे रही अंगूर की बेलों के कारण मनहारी बना हुआ था। अंगूर के बागानों में रसदार अंगूरों के गुच्छे ही गुच्छे दिखाई दे रहे थे। काले और हरे दोनों प्रकार के अंगूर अब परिपक्वता के निकट हैं, ऐसा प्रतीत हो रहा था। कई गुच्छों में जुड़े हुए अंगूरों का आकार विशालता लिए हुए था। पूर्व दिशा की ओर गतिमान आचार्यप्रवर के सम्मुखीन बना सूर्य अपनी तेजस्विता के साथ मानों आतप बरसाने को आतुर था, किन्तु बादलों का आच्छादन उसके इस कार्य में बाधा बने हुए मौसम को सुहावना रूप प्रदान किए हुए था।

पूज्यप्रवर ने कुछ किलोमीटर की दूरी तय की तो अंगूर के बागान पीछे रह गए। मार्ग के दोनों ओर अब दूर-दूर तक सूखे मैदान दिखाई देने लगे। मार्ग में योगेवाड़ी के पूर्व सरपंच तथा भारतीय सेना के सेवा निवृत्त केप्टेन श्री सूर्यवंशी ने पूज्यवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि मैंने भारतीय सेना में रहते हुए सन् १९६२, १९६५ और १९७१ में युद्ध लड़ा था। वे बोले--'आपके दर्शन प्राप्त होना सौभाग्य है। आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। मुझे बताया कि आप नोट, वोट, प्लोट, कोट नहीं लेते,

लोगों के जीवन की खोट लेते हैं। यह बहुत ही अच्छा कार्य है।' आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा और आशीर्वाद प्रदान किया।

बोरगांव के विट्ठल रुक्मणि मंदिर के समीप स्थानीय लोग सरपंच श्री सहदेव परीठ, उपसरपंच श्री नामदेव पाटिल, शिक्षण समिति थोटान के अध्यक्ष श्री बाला साहब आदि के नेतृत्व में बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की अगवानी में खड़े थे। आचार्यप्रवर उनके निकट पधारे तो उन लोगों ने पूज्यप्रवर को करबद्ध सविनय वन्दन किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। लोगों की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर विट्ठल रुक्मणि मंदिर के मुख्य द्वार तक पधारे। मंदिर में बिछे कालीन और फूलों के कारण पूज्यप्रवर भीतर नहीं पधार पाए तो सीढियों से ही संबद्ध लोगों को मंगलपाठ सुनाया। मंदिर परिसर में एक व्यक्ति निरन्तर वीणा वादन कर रहा था। लोगों ने जानकारी दी की इस मंदिर में गत करीब ८४ वर्षों से अखंड वीणा वादन का क्रम चलता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अन्य गांववासियों के साथ जयसिंगराव मल्हार हाइ स्कूल के छात्र-छात्राएं एवं शिक्षक भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सबकी उपस्थिति ने कुछ लम्बे जुलूस का रूप ले लिया। यत्र-तत्र खड़े ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर लगभग १०.८ कि.मी. का विहार कर बोरगांव में स्थित जॉली डे केयर सेन्टर में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। जोलीबोर्ड के मैनेजर श्री गणेश शिन्दे आचार्यप्रवर के पदार्पण से अतिशय प्रफुल्लित थे। वे गत तीन-चार दिनों से पूज्यप्रवर के स्वागत की तैयारियों तथा अहिंसा यात्रा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय बने हुए थे। उनके द्वारा पूज्यप्रवर के स्वागत में की गई तैयारियों और उनकी भक्ति को देखकर यह अनुमानित होना कठिन था कि वे तेरापंथी नहीं हैं।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'दुनिया में दुःख भी है और सुख भी है। जन्म, बुढापा, बीमारी और मृत्यु को दुःख बताया गया है। आदमी को यह सोचना चाहिए कि वह दुःखो से मुक्त कैसे बने। शरीर भले नष्ट हो जाए, किन्तु आत्मा इस जीवन के बाद भी कहीं रहने वाली है। जिस आत्मा का जन्म-मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है, वह पूर्णतया सुखी हो सकती है। इस चक्र को समाप्त करने के लिए धर्म की साधना अपेक्षित है।

साधु धर्म की साधना करता है, लेकिन सारे लोग संत बन जाएं, यह कठिन है। इसलिए गृहस्थों के लिए अणुव्रत का मार्ग बताया गया। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को अपनाकर गृहस्थ दुःख मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ सकता है। उसका जीवन सुखमय और शांतिमय बन सकता है।'

समुपस्थित विद्यार्थियों के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी आएं तो उनका जीवन ज्यादा उपयोगी और अच्छा बन सकता है। कोरा ज्ञान अधूरी बात होती है। ज्ञान के साथ सदाचार जुड़ जाए तो उस संदर्भ में पूरी बात हो सकती है। आचार ज्ञान का सार है।'

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कराईं। बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को आचार्यप्रवर ने साधुचर्या, जैन धर्म, तेरापंथ, अहिंसा यात्रा आदि के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी स्वीकार करने का आह्वान किया तो बोरगांव के सरपंच, उपसरपंच आदि लोग पूज्यप्रवर द्वारा उच्चरित शब्दावली को दोहराकर कृतसंकल्प बने।

शिक्षण समिति-थोरान के अध्यक्ष श्री बाला साहिब, ग्राम पंचायत की ओर से श्री वैभव पाटिल, जोलीबोर्ड लिमिटेड़ के मैनेजर श्री गणेश शिन्दे, शिक्षक श्री धनपाल पाटिल ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

ज्ञातव्य

आचार्यप्रवर के जयसिंगपुर प्रवास के दौरान ५ मार्च को प्रजापिता ईश्वरीय विश्वविद्यालय सेवाकेन्द्र-जयसिंगपुर की संचालिका रानी दीदी आदि पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने पूज्यप्रवर के प्रति अपने

मंगलभाव अभिव्यक्त किए। आचार्यप्रवर का उनके साथ संक्षिप्त वार्तालाप हुआ। सिरोल के पूर्व विधायक श्री उल्हास पाटिल ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

श्री कन्हैयालाल छाजेड़ (श्रीडूंगरगढ) को समाजभूषण अलंकरण दिए जाने की घोषणा

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में गत १ मार्च को तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री सुरेशचंद गोयल ने तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक, शासनसेवी, संघसेवी श्री कन्हैयालाल छाजेड़ (श्रीडूंगरगढ) को समाजभूषण अलंकरण प्रदान करने की घोषणा की है।

श्री संदीप कोठारी कल्याण परिषद के संयोजक मनोनीत

२९ फरवरी २०२० की कल्याण परिषद की संगोष्ठी में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री संदीप कोठारी को कल्याण परिषद का संयोजक मनोनीत किया गया। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया।

तिथि दर्पण (2077) में भूल सुधार

मित्र परिषद कोलकाता द्वारा प्रकाशित तिथि दर्पण में श्रावण कृष्ण पक्ष की पक्खी श्रावण अमावस्या अर्थात २० जुलाई २०२० के स्थान पर श्रावण कृष्णा चतुर्दशी अर्थात् १९ जुलाई २०२० पढ़ा जाए।

स्मृति संबल

विज्ञप्ति का एक स्तंभ रहा है स्मृति संबल। अपने किसी स्वजन के देहान्त के उपरांत कई परिवार अध्यात्मिक संबल की प्राप्ति हेतु गुरु सन्निधि में पहुंचते हैं और आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त करते हैं। कालधर्म को प्राप्त व्यक्ति का परिचय भी 'स्मृति संबल' के रूप में लम्बे अरसे से विज्ञप्ति में प्रकाशित किया जा रहा है ताकि समाज को उसकी अवगति प्राप्त हो सके। आधुनिक युग में सोश्यल मीडिया आदि के माध्यम से किसी व्यक्ति के देहावसान की सूचना भी त्वरित रूप में समाज को प्राप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में कई दिनों बाद परिचय प्रकाशन भी अप्रासंगिक और अनुपयोगी-सा बन गया है। अतः इस अंक के साथ उस क्रम को विराम दिया जा रहा है।

गत कुछ समय से जिन दिवंगत लोगों के परिचय हमें प्राप्त हुए, किन्तु उन्हें स्थानाभाव के कारण प्रकाशित नहीं किया जा सका। उनकी सूची यहां प्रकाशित की जा रही है। सभी दिवंगत श्रद्धालुओं के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि और उनके आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

१. कालू निवासी फरीदाबाद प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती भंवरीदेवी राखेचा (धर्मपत्नी स्व.श्री राजरूप राखेचा) (अनशन में)।

२. बायतू निवासी मुम्बई प्रवासी श्री हरकचंद भंसाली (सुपुत्र स्व.श्री तखतमल भंसाली)

३. चूरु निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती अरूणा सुराणा (धर्मपत्नी श्री विमल सुराणा)

४. सरदारशहर निवासी किशनगंज प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती कांतादेवी दफ्तरी (धर्मपत्नी स्व.श्री भीकमचंद दफ्तरी) (अनशन में)।

५. नोखा निवासी बल्लारी प्रवासी श्रीमती सुशीलादेवी छाजेड़ (धर्मपत्नी स्व.श्री बालचंद छाजेड़)

६. सादुलपुर निवासी राजमुन्द्री प्रवासी श्री पदमचंद सुराणा (सुपुत्र स्व.श्री मोहनलाल सुराणा)

७. श्रीडूंगरगढ निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती जमनीदेवी पुगलिया (धर्मपत्नी स्व.श्री माणकचंद पुगलिया)

८. लाडनूं निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री आसकरण कुचेरिया (सुपुत्र स्व.श्री खींवकरण कुचेरिया)

९. टोहाना निवासी श्रद्धानिस्ठ लाला ईश्वरदास जैन (सुपुत्र स्व. लाला श्री मानसिंह जैन)
१०. उमरा निवासी फतेहाबाद प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती चन्द्राणी जैन (धर्मपत्नी स्व.श्री महेन्द्र जैन)
११. खिंवाडा निवासी ठाणे प्रवासी श्रीमती गजराबाई पुनमिया (धर्मपत्नी श्री ठाकरमल पुनमिया)
१२. पदराड़ा निवासी सूरत प्रवासी श्री कांतीलाल बाफना (सुपुत्र श्री डालचंद बाफना)
१३. मोमासर निवासी श्रद्धानिष्ठ श्री पूनमचंद सेठिया (सुपुत्र स्व.श्री कोडामल सेठिया)
१४. सरदारशहर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती लक्ष्मीदेवी खटेड (धर्मपत्नी स्व.श्री पूनमचंद खटेड)
१५. श्रीडूंगरगढ निवासी सूरत प्रवासी श्री चम्पालाल बोथरा (सुपुत्र श्री लाभूराम बोथरा) (अनशन में)
१६. पडासली निवासी गोरेगांव प्रवासी श्रीमती दाखीदेवी जैन (धर्मपत्नी श्री सम्पतलाल जैन)
१७. चाडवास निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती अमरेश सेठिया (धर्मपत्नी श्री बहादुर सेठिया)
१८. चारभुजा निवासी वाशी प्रवासी श्रीमती सरोजदेवी सिंघवी (धर्मपत्नी श्री शांतिलाल सिंघवी)
१९. सरदारशहर निवासी वीरपुर (नेपाल) प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती मोछबीदेवी चिंडालिया (धर्मपत्नी स्व. श्री हंसराज चिंडालिया)
२०. रींछेड निवासी दादर प्रवासी श्रीमती लक्ष्मीबाई कोठारी (धर्मपत्नी श्री डालचंद कोठारी)
२१. विराटनगर निवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती मघादेवी गोलछा
२२. समदडी निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती सुशीलादेवी जीरावला (धर्मपत्नी श्री घीसूलाल जीरावला) (अनशन में)
२३. बालोतरा निवासी श्री घेवरचंद गांधी मेहता (सुपुत्र स्व.श्री ओगड़चंद गांधी मेहता) (अनशन में)
२४. सिंधनूर निवासी श्री नीकल नाहर (सुपुत्र श्री कंवरलाल नाहर)
२५. ऊमरी निवासी मैसूर प्रवासी श्री शांतिलाल दक (सुपुत्र स्व.श्री बगतावरमल दक)
२६. ऊमरी निवासी मैसूर प्रवासी श्रीमती नजरदेवी दक (धर्मपत्नी श्री गेहरीलाल दक)
२७. श्रीडूंगरगढ निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री भंवरलाल राखेचा (सुपुत्र स्व.श्री ताराचंद राखेचा)
२८. बगड़ी निवासी कोयम्बत्तूर प्रवासी श्रीमती कमलादेवी नागसेठिया (धर्मपत्नी स्व.श्री सम्पतराज नागसेठिया)
२९. चूरू निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री उम्मेदमल लूणिया (सुपुत्र स्व.श्री मन्नालाल लूणिया)
३०. बीदासर निवासी कोलकाता प्रवासी शासनसेवी श्री जंवरीमल बेंगानी (सुपुत्र स्व.श्री मोहनलाल बेंगानी)
३१. बग्गड़ निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री सुवालाल नंगावत (अनशन में)
३२. गंगाशहर निवासी कोलकाता प्रवासी श्रद्धानिष्ठ श्री तोलाराम सामसुखा (सुपुत्र स्व.श्री मेघराज सामसुखा)
३३. बीदासर निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती प्रमीला बेंगानी (धर्मपत्नी श्री विमलसिंह बेंगानी)
३४. राजलदेसर निवासी कोलकाता प्रवासी श्री नोरतनमल दूगड़ (सुपुत्र स्व.श्री जुगराजमल दूगड़)
३५. कोटकपूरा निवासी श्रीमती पूजा जैन (धर्मपत्नी श्री बृजभूषण जैन) (अनशन में)
३६. समदडी निवासी हुब्बली प्रवासी श्रीमती तीजादेवी लूणिया (धर्मपत्नी स्व.श्री मिश्रीमल लूणिया) (अनशन में)
३७. धूरी निवासी श्रीमती विद्यादेवी जैन (धर्मपत्नी स्व.श्री भारुराम जैन)
३८. सरदारशहर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्रीमती गिन्नीदेवी बैद (धर्मपत्नी स्व.श्री बच्छराज बैद)
३९. सुजानगढ निवासी भुवनेश्वर प्रवासी श्रीमती प्रतिभा जैन (धर्मपत्नी श्री प्रताजसिंह सिंघी)
४०. असाडा निवासी सूरत प्रवासी श्री इंद्रचंद भंसाली (सुपुत्र स्व.श्री शिवलाल भंसाली)
४१. लाडनूं निवासी कोलकाता प्रवासी श्री शांतिलाल खटेड (सुपुत्र स्व.श्री रायचंद खटेड़)
४२. राजलदेसर निवासी राऊरकेला प्रवासी श्रीमती संतोषदेवी बैद (धर्मपत्नी श्री संजय बैद)
४३. बेमाली निवासी श्रवणबेलगोला प्रवासी श्रीमती मगनीबाई बोहरा (धर्मपत्नी श्री मीठालाल बोहरा)
४४. रतनगढ निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री निर्मल बैद (सुपुत्र स्व.श्री उत्तमचंद बैद)

४५. सोजतरोड निवासी चेन्नई प्रवासी श्री गौतमचंद वेदमूथा (सुपुत्र श्री सिरेमल वेदमूथा)
४६. बीदासर निवासी कोलकाता प्रवासी श्री जतनमल गेलडा (सुपुत्र स्व.श्री बालचंद गेलडा)
४७. लूणकरण निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री नितेश राखेचा (सुपुत्र स्व.श्री कंवरलाल राखेचा)
४८. राजलदेसर निवासी गुलाबबाग प्रवासी श्रीमती सरोजदेवी बैद (धर्मपत्नी श्री विजयकुमार बैद)
४९. मारवाड़जंक्शन निवासी पूना प्रवासी श्रीमती ओटीदेवी भंडारी (धर्मपत्नी स्व.श्री मिश्रीमल भंडारी) (अनशन में)
५०. सोजतरोड निवासी मुम्बई प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती सुन्दरकला सोनी (धर्मपत्नी स्व.श्री रामचंद्र सोनी)
५१. इडवा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री अमोलक भंडारी (सुपुत्र श्री विमल भंडारी)
५२. रतनगढ निवासी पटना प्रवासी श्री छत्तरसिंह बोथरा (सुपुत्र स्व.श्री महालचंद बोथरा)
५३. बीदासर निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती रतनीदेवी दूगड़ (धर्मपत्नी स्व.श्री केसरीचंद दूगड़)
५४. खरनोटा निवासी बडोदा प्रवासी श्रीमती सुन्दरबाई बोल्या (धर्मपत्नी स्व.श्री घीसूलाल बोल्या)
५५. गंगाशहर निवासी हासन प्रवासी श्री शांतिलाल गुलगुलिया (सुपुत्र श्री बालचंद गुलगुलिया)
५६. चिताम्बा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री मांगीलाल दलाल (सुपुत्र स्व.श्री हजारीमल दलाल)
५७. नमाणा निवासी कांकरोली प्रवासी डॉ. सुरेन्द्र बागरेचा (सुपुत्र स्व.श्री उदयलाल बागरेचा)
५८. सिरियारी निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती सायरदेवी छाजेड़ (धर्मपत्नी श्री मांगीलाल छाजेड़)
५९. छापर निवासी नागपुर प्रवासी श्रीमती विमलादेवी नाहटा (धर्मपत्नी श्री सूरजमल नाहटा)
६०. जोधपुर निवासी नासिकरोड प्रवासी श्री बंशीलाल भंडारी (सुपुत्र स्व.श्री जेठमल भंडारी)
६१. चिताम्बा निवासी सूरत प्रवासी श्रीमती मगनीबाई भटेवरा (धर्मपत्नी स्व.श्री सोहनलाल भटेवरा)
६२. धूंधला निवासी चेन्नई प्रवासी श्रीमती सुखीबाई संचेती (धर्मपत्नी स्व.श्री पारसमल संचेती)
६३. कानाना निवासी इचलकरंजी प्रवासी श्री ऋषभचंद चौपड़ा (सुपुत्र स्व.श्री राणमल चौपड़ा)
६४. पीपाडशहर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती कंचनबाई चौधरी (धर्मपत्नी श्री रूपराज चौधरी)
६५. राणावास निवासी हासन प्रवासी श्रीमती कमलाबाई तातेड़ (धर्मपत्नी श्री फूलचंद तातेड़)
६६. राणावास निवासी हासन प्रवासी श्रीमती केसरबाई तातेड़ (धर्मपत्नी श्री मोहनलाल तातेड़)
६७. राजनगर निवासी श्री बाबूलाल चपलोत (सुपुत्र स्व.श्री मदनलाल चपलोत) (अनशन में)
६८. नागौर निवासी दुर्ग प्रवासी श्रीमती बुधियादेवी बरमेचा (धर्मपत्नी स्व.श्री मुन्नालाल बरमेचा) (अनशन में)
६९. बालोतरा निवासी सूरत प्रवासी श्री माणकचंद छाजेड़ (सुपुत्र स्व.श्री चन्दनमल छाजेड़)
७०. जाटान निम्बाहेडा निवासी सूरत प्रवासी श्री मनोहरलाल भटेवरा (सुपुत्र श्री हरकचंद भटेवरा)
७१. बालोतरा निवासी सूरत प्रवासी श्रीमती अणचीदेवी छाजेड़ (धर्मपत्नी स्व.श्री चन्दनमल छाजेड़)
७२. मोखुन्दा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती मीठूबाई पोखरणा (धर्मपत्नी स्व.श्री दीपचंद पोखरणा)
७३. रामसिंहगुड़ा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री बाबूलाल कोठारी (सुपुत्र स्व.श्री रायचंद कोठारी)
७४. सुजानगढ निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री पृथ्वीराज कोठारी (सुपुत्र स्व.श्री मोतीलाल कोठारी)
७५. उदयरामसर निवासी बीकानेर प्रवासी श्रीमती ममोलदेवी सेठिया (धर्मपत्नी श्री इन्द्रचंद सेठिया)
७६. चाडवास निवासी बोरीवली प्रवासी श्री हेमराज चम्पालाल सेठिया
७७. कनाना निवासी हुब्बली प्रवासी श्रीमती कांतादेवी रामलाल श्रीश्रीमाल
७८. सरदारशहर निवासी भयंदर प्रवासी श्रीमती शांतिदेवी तेजकरण नाहटा
७९. हांसी निवासी नई दिल्ली प्रवासी श्री नरेश जैन (सुपुत्र स्व.श्री शेरसिंह जैन)
८०. सरदारशहर निवासी श्रीमती माणकदेवी बोरड़ (धर्मपत्नी श्री हनुमानमल बोरड़)
८१. खिंवाडा निवासी चैन्नई प्रवासी श्री मीठालाल पुनमिया (सुपुत्र स्व.श्री नथमल पुनमिया)

८२. श्रीडूंगरगढ निवासी कटक प्रवासी श्री सुभाष सेठिया (सुपुत्र स्व.श्री दुलीचंद सेठिया)
८३. बिठोडाकला निवासी पामल प्रवासी श्रीमती उमराव पिरोदिया (धर्मपत्नी श्री देवीचंद पिरोदिया)
८४. सादुलपुर निवासी बालेश्वर प्रवासी श्री रूपचंद सिंघी (सुपुत्र श्री सुगनचंद सिंघी) (अनशन में)
८५. सरदारशहर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री माणकचंद बोथरा (सुपुत्र स्व.श्री भानीराम बोथरा)
८६. भीनासर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री शांतिलाल संचेती (सुपुत्र स्व.श्री सम्पतलाल संचेती)
८७. बीदासर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री निर्मलकुमार बैंगानी (सुपुत्र स्व.श्री पन्नालाल बेंगानी)
८८. पिपलांत्री निवासी मुम्बई प्रवासी श्री शांतिलाल मेहता (सुपुत्र स्व.श्री भंवरलाल मेहता)
८९. बालोतरा निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती हीरादेवी चोपड़ा (धर्मपत्नी श्री लूणचंद चोपड़ा)
९०. थामला निवासी डोम्बीवली प्रवासी श्री भंवरलाल सोनी (सुपुत्र स्व.श्री जयचंदलाल सोनी)
९१. माडका निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती सीताबहन परीख (धर्मपत्नी श्री रमणीकभाई परीख) (अनशन में)
९२. सुजानगढ निवासी कोलकाता प्रवासी श्री विनोदकुमार दसाणी (सुपुत्र स्व.श्री शुभकरण दसाणी)
९३. श्रीडूंगरगढ निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती धनीदेवी छाजेड़ (धर्मपत्नी श्री कन्हैयालाल छाजेड़)
९४. असाड़ा निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती आसीदेवी संकलेचा (धर्मपत्नी श्री मुकन्दचंद संकलेचा)
९५. गादाणा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती सुकनीबाई सुन्देशामूथा (धर्मपत्नी स्व.श्री वस्तीमल सुन्देशामूथा)
९६. सरदारशहर निवासी काठमांडू प्रवासी श्रीमती लक्ष्मीदेवी कोठारी (धर्मपत्नी श्री धर्मप्रकाश कोठारी)
९७. भीम निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री रोशनलाल चावत (सुपुत्र स्व.श्री भेरूलाल चावत)
९८. गंगाशहर निवासी चेन्नई प्रवासी श्री ताराचंद पारख (सुपुत्र श्री पूनमचंद पारख)
९९. फरारा निवासी मुम्बई प्रवासी श्रीमती संगीता पारसजी पामेचा (सुपुत्री बंशीलाल मेहता)
१००. टाडगढ़ निवासी मैसूर प्रवासी श्री भीकमचंद पितलिया (सुपुत्र स्व.श्री शंकरलाल पितलिया)
१०१. आसीन्द निवासी चिकमंगलूर प्रवासी श्रीमती वसन्ता गोखरू (धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रकुमार गोखरू)
१०२. असाढा निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती खम्मादेवी भंसाली (धर्मपत्नी स्व.श्री घेटमल भंसाली)
१०३ आसीन्द निवासी श्री रतनलाल रांका (सुपुत्र श्री हेमराज रांका)
१०४. सरदाशर निवासी श्री बाबूलाल छाजेड़ (सुपुत्र स्व.श्री शुभकरण छाजेड़)
१०५. लाडनूं निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री सुमेर सिंघी (सुपुत्र श्री ताराचंद सिंघी)
१०६. झाबुआ निवासी श्रीमती हंसादेवी कोटडिया (धर्मपत्नी स्व.श्री अनोखीलाल कोटडिया) (अनशन में)
१०७. रड़का निवासी सूरत प्रवासी श्री वसन्तलाल मेहता (सुपुत्र स्व.श्री देवचंदभाई मेहता)
१०८. सुरसिंह का गुड़ा निवासी चैन्नई प्रवासी श्री महेन्द्रकुमार संचेती (सुपुत्र श्री बस्तीमल संचेती)
१०९. देवगढ निवासी मैसूर प्रवासी श्री अशोक श्रीमाल (सुपुत्र श्री अभिषेक श्रीमाल)
११०. रामसिंहकागुड़ा निवासी चिकमंगलूर प्रवासी श्री शांतिलाल कोठारी (सुपुत्र श्री घीसूलाल कोठारी)
१११. राजलदेसर निवासी पूर्णिया प्रवासी श्री विजयसिंह नाहर (सुपुत्र शासनसेवी स्व.श्री चम्पालाल नाहर)
११२. सरदारशहर निवासी कोलकाता प्रवासी श्री मोहनलाल सुराणा (सुपुत्र स्व.श्री हरकचंद सुराणा)
११३. सोजतरोड निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती चन्द्राबाई बरड़िया (धर्मपत्नी श्री हगामीलाल बरड़िया)
११४. देवगढ निवासी हुब्बली प्रवासी अणुव्रतसेवी श्री पारसमल बोहरा (सुपुत्र श्री कन्हैयालाल बोहरा)
११५. गूलर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रद्धानिष्ठ श्री प्रेमचंद कोठारी (सुपुत्र स्व.श्री मोहनलाल कोठारी)
११६. लाडनूं निवासी सेलम प्रवासी श्री छत्तरसिंह लूंकड़ (सुपुत्र श्री नथमल लूंकड़)
११७. बालोतरा निवासी कोयम्बतूर प्रवासी श्री शांतिलाल सालेचा (सुपुत्र श्री तिलोकचंद सालेचा)
११८. राजनगर निवासी कूर्ला प्रवासी श्री लक्ष्मीलाल बडोला (सुपुत्र स्व.श्री रूपलाल बडोला)
११९. ननाणा निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्री नाथूलाल बाबेल (सुपुत्र स्व.श्री भूरालाल बाबेल)

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

१२०. बालोतरा निवासी श्री चम्पालाल गोगड़ (सुपुत्र स्व.श्री सहजराज गोगड़)
१२१. गुडारामसिंह निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती घीसीदेवी गादिया (धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.श्री सम्पतराज गादिया)
१२२. पदराड़ा निवासी पालघर प्रवासी श्री छोगालाल बाफना (सुपुत्र स्व.श्री भूरीलाल बाफना)
१२३. रतनगढ निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री रतनलाल आंचलिया (सुपुत्र स्व.श्री बुधमल आंचलिया)
१२४. श्रीडूंगरगढ निवासी चैन्नई प्रवासी श्री प्रवीणकुमार डागा (सुपुत्र स्व.श्री माणकचंद डागा)
१२५. तारानगर निवासी पुणे प्रवासी श्रीमती लक्ष्मीदेवी डागा (धर्मपत्नी स्व.श्री पन्नालाल डागा)
१२६. बल्लुंदा निवासी चैन्नई प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती लाडकंवर सेठिया (धर्मपत्नी समाज भूषण स्व. श्री जसवंतमल सेठिया) (अनशन में)
१२८. कन्टालिया निवासी चैन्नई प्रवासी श्री नेमीचंद डागा (सुपुत्र स्व.श्री नथमल डागा)
१२९. चिताम्बा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री हीरालाल मांडोत (सुपुत्र स्व.श्री मीठालाल मांडोत)
१३०. राजलदेसर निवासी शिवकासी प्रवासी श्री पन्नालाल बैद (सुपुत्र श्री धनराज बैद)
१३१. कुंवाथल निवासी वडोदरा प्रवासी श्री महेश समदड़िया (सुपुत्र श्री भंवरलाल समदडिया)
१३२. पीपाडसिटी निवासी बीड़ प्रवासी श्री तेजराज समदडिया (सुपुत्र श्री भंवरीलाल समदडिया)
१३३. श्रीडूंगरगढ निवासी कोलकाता प्रवासी श्री मूलचंद सेठिया (सुपुत्र स्व.श्री चन्दनमल सेठिया)
१३४. बीदासर निवासी मुम्बई प्रवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व.श्रीमती मोहनीदेवी गिडिया (धर्मपत्नी श्री दुलीचंद गिडिया)
१३५. फतेहगढ निवासी मुम्बई प्रवासी श्री प्रागजी नागजी खंडोर (अनशन में)
१३६. नोखा निवासी सूरत प्रवासी श्री भुवनकुमार बेंगाणी (सुपुत्र श्री अशोककुमार बेंगाणी)
१३७. पाली निवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री अमरचंद गादिया (सुपुत्र स्व.श्री खींवराज गादिया)
१३८. बाडमेर निवासी मैसूर प्रवासी श्री राजकुमार मेहता (सुपुत्र श्री पुखराज गांधी मेहता)
१३९. बीदासर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती मल्लिदेवी बरड़िया (धर्मपत्नी स्व.श्री सुमेरमलजी बरडिया)
१४०. नवी मुम्बई प्रवासी श्रीमती रेखादेवी श्रीमाल (धर्मपत्नी श्री सुभाषकुमार श्रीमाल)
१४१. पडिहारा निवासी किशनगंज प्रवासी श्री सूरजमल दूगड़ (सुपुत्र स्व.श्री भंवरलाल दूगड़)
१४२. सादुलपुर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री उत्तमचंद मालू (सुपुत्र स्व.श्री पुरखचंद मालू)
१४३. बरार निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री नन्दराम देरासरिया (सुपुत्र श्री अमरचंद देरासरिया)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

११०००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. अमरचंदजी गादिया, पाली की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू पदमचंद-पुष्पा, गौतमचंद, नेमीचंद-चन्द्रकांता, अंकेशकुमार-वर्षा गादिया परिवार।
५१००/- कल्याणमित्र श्री बाबूलालजी छाजेड़, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती रूपकंवर, अनिल-ज्योति, रिद्धिका, सिद्धि, आदि छाजेड़ परिवार अजमेर।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला